आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 272 | ARYA SABHA MAURITIUS | 8th July to 28th July 2013

ओ३म् ।। अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
निहोता सत्सि बर्हिषि ।।

Om! Agna ā yāhi vitayé grināno havyadātayé.
Ni hotā satsi barhishi

Sām Véda 1-1-1

Glossaire / Shabdārtha

He agné – O Dieu tout-resplendissant, **Vitayé** – tout-puissant, Grināhaha - pour qui nous avons une prédilection, **Havyadātayé** – offrir des oblations au feu sacré du yajnā d'où émane l'essentiel qui est transmis aux éléments de la nature, **A yāhi** – qui reçoit **Hotā** – qui accepte toutes les offrandes, **Barhishi** – Les pensées sublimes qui se manifestent dans notre cœur, dans notre esprit et dans notre âme par la pratique régulière du yajnā, des prières et de la méditation, **Ni, Satsi** – soit établi / placé / fixé.

Interprétation / Bhāwārtha

O Seigneur Tout-puissant et Resplendissant ! Tu es le Créateur de l'univers et la source infinie d'énergie, de dynamisme, de richesse matérielle, de lumière spirituelle et intellectuelle ! Tu es notre Dieu Suprême, unique et digne d'adoration !

Que nous soyons toujours bénis et inspirés des pensées sublimes dans notre esprit, dans notre cœur et dans notre âme pendant toutes nos prières, notre méditation, nos actions quotidiennes et nos études pour l'acquisition de connaissance parfaite de l'univers.

Nous sollicitons ta bénédiction ici-bas pour que nous puissions entreprendre la pratique régulière du yajnā. Que ce feu sacré, tout en recevant nos offrandes en forme d'oblations (āhutis), puisse transmettre l'essentiel (de ces offrandes), qui est purificateur et très bénéfique, aux éléments de la nature tels que l'air / l'atmosphère, l'eau et la terre par le truchement des rayons du soleil.

N. Ghoorah

देवऋषि बूलेल जी : स्मृतिशेष

नब्बे वर्ष की आयु में **श्री देवऋषि बूलेल जी** का स्वर्गवास हुआ। उनका अंतिम संस्कार रविवार १४ जुलाई को साढ़े तीन बजे अपराह्न में गण्यमान्य जनों की उपस्थिति में Tranquebar की श्मशान भूमि में वैदिक रीत्यानुसार किया गया।

देवऋषि बूलेल जी विशेषकर 'गयासिंह आश्रम' के प्रबन्धक के रूप में स्मरण किये जायेंगे। पंडित गयासिंह जी ने इस आश्रम को अनाथालय के रूप में खोला था। उनके निधन के उपरान्त समाज-सेवकों ने इस अनाथालय को 'गयासिंह आश्रम' के नाम से प्रसिद्ध कर डाला। डॉक्टर झगरू सिगोबिन, श्री छत्तर मास्टर और श्री तिलक प्रसाद कालीचरण जी के प्रबन्धन-काल में इस आश्रम में अनगिनत जनों को सेवा प्रदान की गई।

श्री तिलक प्रसाद कालीचरण जी के देहावसान के पश्चात् श्री देवऋषि जी ने कार्य-भार सम्भाला। उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी से अवकाश पाकर पिछले तीस वर्षों से 'गयासिंह आश्रम' के मैनेजर के रूप में अपनी निस्वार्थ सेवा प्रदान की। आश्रम की सभी आश्रिताएँ उन्हें 'चाचा' पुकारती थीं। वे बड़े ही अनुशासनपूर्वक इस आश्रम की देखभाल करते थे। उनके कार्य-काल में आश्रम के भवन का विस्तार किया गया। इस आश्रम में समय-समय पर अनेक सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्य होते रहे । बहुत-सी कन्याओं के विवाह-संस्कार सम्पन्न हुए। भारत एवं अन्य देशों से यहाँ कई नामी राजनेताओं एवं साधु-संन्यासियों का आगमन होता रहा। श्री देवऋषि जी सभी के भव्य स्वागत का उचित प्रबन्ध करते रहे। फलतः 'गयासिंह आश्रम' की लोकप्रियता बढ़ती गई। दाताओं के दान से यह आश्रम पूर्ण आत्म-निर्भर हो गया ।

देवऋषि जी के परिवार के सदस्यों ने दाह-संस्कार से पूर्व उनके शव को गयासिंह आश्रम में कुछ समय के लिए रखा, जहाँ आश्रिताओं ने उनके अंतिम दर्शन किये। शव को देखकर सभी अश्रु-पूरित थीं। ये आँसू श्री देवऋषि जी के प्रति उन आश्रिताओं की श्रद्धांजलि थी।

किसी कवि ने क्या ही खूब लिखा है —

यह दुनिया आनी जानी, रहता नाम उसी
का जिसने की हो कुछ कुरबानी ।।

गयासिंह आश्रम से शव को उठाया गया और श्मशान-भूमि तक यात्रा हुई । हित-मित्रों और रिश्ते-नाते के लोगों ने शव को चिता पर रखा। पंडित-पंडिताओं ने वेद-मन्त्रों से वातावरण को गुँजा दिया। देखते-देखते पार्थिव शरीर भस्म हो गया। केवल कीर्ति-काया शेष रह गई।

डॉ० उदयनारायण गंगू

सम्पादकीय

श्रावणी उपाकर्म का माहात्म्य

आर्य समाज द्वारा आयोजित सभी पर्वों की अपनी महिमा होती है । उनका भव्य आयोजन करना हमारा प्रमुख उद्देश्य होता है। हम अपने सभी पर्वों को बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। वैदिक रीति अनुकूल उनका कार्यक्रम तैयार करते हैं। उन्हें प्रभावशाली बनाकर सभी को प्रभावित करते हैं, ताकि हमारे पर्वों का महत्व बढ़ता रहे ।

हम अपने मुख्य उत्सवों में सबसे अधिक महत्व श्रावणी उपाकर्म महोत्सव को देते हैं। इस महान उत्सव को हम केवल एक दिन नहीं मनाते हैं, बल्कि पूरे श्रावण मास तक बड़े भक्ति-भाव से आयोजित करते हैं। इस पर्व को विशेष रूप से मनाने के लिए पूर्व ही से खास तैयारी में लग जाते हैं। शरीर, मन, बुद्धि और आचरण की शुद्धता, गृह-मन्दिर की स्वच्छता और सजावटों पर पूरा ध्यान देते हैं ताकि इस पावन पर्व की महत्ता स्थापित रहे। श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में हमारे सभी पुरोहित-पुरोहिताएँ, वेद-पाठी, शाखा समाजों के अधिकारी और देश के आर्य-बन्धु बड़े भक्तिपूर्ण दृष्टिकोण से यज्ञ-महायज्ञों का अनुष्ठान करके भक्तिमय वातावरण उत्पन्न करते हैं। जहाँ श्रोतागण आध्यात्मिक सुख, शान्ति एवं आनन्द का अनुभव करते हैं। श्रावणी उपाकर्म महोत्सव में समस्त हिन्दू समुदाय को वेदों के पठन-पाठन तथा श्रवण करने का शुभ अवसर भी प्राप्त होता है ।

श्रावणी उपाकर्म पर्व को 'वेदोत्सव' भी कहा जाता है। इस महान पर्व के संदर्भ में वेदों का अध्ययन करने का विशेष अवसर होता है। वेद-पाठी गण वेद-मन्त्रों के शुद्धोच्चारण से सभी श्रोताओं को मुग्ध कर देते हैं। हमारे धर्मोपदेशक और भजनोपदेशक अपनी मधुर वाणी द्वारा आनन्दित करके वेद का शिक्षाप्रद संदेश देते हैं। इस पर्व के संदर्भ में जो गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, उनसे हमें वेदों की सत्य एवं शाश्वत विद्याएँ प्राप्त होती हैं। ईश्वर की वाणी वेदों का ज्ञान ग्रहण करके हमारे युवावर्ग प्रेरित होते हैं और वेदों का पठन-पाठन करने में उनकी रुचि उत्तेजित होती है। हमारे देश में वैदिक विद्याओं का प्रसार करने में श्रावणी उपाकर्म महोत्सव हिन्दू समाज को आध्यात्मिक जगत में पदार्पण कराता है।

हमारे देश में प्रति वर्ष समस्त आर्य परिवार बड़ी श्रद्धा-भक्ति से श्रावणी उपाकर्म महोत्सव मनाते हैं। इस प्रभावशाली एवं भक्ति पूर्ण उत्सव के प्रभाव से हमारे अनेक भाई-बहन वैदिक आलोक पाकर सही मार्ग दर्शन प्राप्त करते हैं। कितने दुर्जन, पाखण्डी और अत्याचारी भी इस पर्व के भव्य आयोजन से आकर्षित होकर सुपथगामी बन जाते हैं। वेद की ज्योति पाकर उनकी कुटिल भावनाएँ दूर हो जाती हैं। आज के भौतिकवादी जनों का उद्धार करने में श्रावणी महोत्सव का बहुत बड़ा योगदान है। इस पावन पर्व की श्रेष्ठता स्थापित करना हमारा परम लक्ष्य होना चाहिए।

श्रावणी महोत्सव की पुनीत एवं धार्मिक गतिविधियों में सम्मिलित होकर हमारी आत्मा ईश्वर-भक्ति, पूजा-पाठ, वेदाध्ययन आदि शुभकर्मों से आनन्दित हो जाती है। हमारे तनावपूर्ण जीवन से सारी चिन्ताएँ दूर हो जाती हैं। वेद-ज्योति के प्रभाव से तथा यज्ञ-महायज्ञों के अनुष्ठान से हम इस पावन पर्व के अन्तर्गत भौतिक बन्धनों से अलग महसूस करते हैं। हमारे सामान्य जीवन में परिवर्तन आ जाता है। हम भौतिकवादी होकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करते हैं। हमारी बौद्धिक मानसिक और आत्मिक शुद्धि निमित्त श्रावणी महोत्सव अति लाभदायक सिद्ध होता है।

समस्त आर्य परिवारों से आग्रह है कि आप बड़ी श्रद्धा और आस्था पूर्वक इस महान पर्व में भाग लें। सभी सामाजिक संस्थापकों से निवेदन है कि आप सुयोजित ढंग से श्रावणी उपाकर्म की तैयारी करें। हमारे पुरोहित-पुरोहिताओं एवं विद्वानों से यही माँग करते हैं कि आप इस पर्व की श्रेष्ठता बढ़ाने में पूरा योगदान दें। हम एक आदर्श आर्य का प्रमाण देकर बड़ी पवित्रता के साथ वैदिक पर्व पद्धति अनुकूल इस वर्ष अपना महोत्सव का आयोजन करेंगे तो इसकी श्रेष्ठता और बढ़ जाएगी।

आर्य सभा एवं वेद प्रचार समिति की यही कामना है कि सभी आर्य बन्धुओं के गृह पर बड़ी आस्था पूर्वक यज्ञ एवं धर्मोपदेशों का आयोजन हों। सभी शाखा समाजों की ओर से प्रभावशाली कार्यक्रमों की तैयारी हों। हमारी पूर्णाशा है कि सभी भाई-बहनों के पूरे सहयोग से श्रावणी उपाकर्म सफलता पूर्वक सम्पन्न हों। हम सभी सहयोगियों के प्रति आभारी रहेंगे, जो सन् २०१३ के श्रावणी महोत्सव को सफल बनाने में अपना सराहनीय सहयोग देंगे।

वेद की ज्योति घर-घर जलती रहे ।
'ओ३म्' नाम की महिमा देश में बढ़ती रहे ।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के, आर्य रत्न

संगीत दिवस

हर साल की तरह इस साल भी बड़े भव्य रूप से डी.ए.वी. कोलिज मोर्सेल्माँ ने संगीत दिवस के साथ पारितोषिक वितरण उत्सव मनाया। क़रीब एक हज़ार विद्यार्थियों को बैठने की सुविधा प्रदान करने के लिए विशाल पण्डाल कॉलिज के प्रांगण में बनाया गया था। पी.टी.ए. के प्रधान और सदस्यगण उपस्थित थे।

नव मनोनीत आर्य सभा प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर मुख्य अतिथि थे और उनके साथ दोनों उपप्रधान डा० उदयनारायण गंगू और सत्यदेव प्रीतम। कॉलिज समिति के प्रधान और मन्त्री डा० रुद्रसेन निऊर और डा० जयचन्द लालबिहारी भी उपस्थित थे। विशेष अतिथि के रूप में श्रीमान ए० बन्धन जिन्होंने ५०,००० रुपये का वज़ीफ़ा दिया एक विद्यार्थी को जो विश्वविद्यालयीय स्तर की पढ़ाई कर सकता है।

कॉलिज की सभी कक्षाओं के प्रतिनिधियों द्वारा बारी बारी से एक से एक रोचक कार्यक्रम पेश किये गए जिन्हें उपस्थित अभिभावकों ने खूब पसन्द किया। भाषणों के बीच बीच में उन सभी विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये गए जिन्होंने हर विषय में प्रथम स्थान पाया और जो प्रतियोगिताओं में अव्वल आए।

संगीत दिवस एवं पारितोषिक वितरण

फ्लाक ज़िले में स्थित लावाँचीर गाँव की हमारी प्राथमिक पाठशाला आर्यन वैदिक में बुधवार दि० १९ जून २०१३ को संगीत दिवस मनाया गया। स्कूल के प्रांगण में एक विशाल शामियाना ताना गया था जो पहले से ही अभिभावकों एवं स्कूली बच्चों से खचाखच भरा था। हम जब डेढ़ बजे वहाँ पहुँचे तो संगीत का कार्यक्रम चल रहा था। बच्चों द्वारा प्रस्तुत गीत, नृत्य एवं लघु नाटक के रोचक कार्यक्रम ऊँचे स्तर के थे। बच्चों के माता-पिता कार्यक्रम देखकर अति प्रसन्न दिख रहे थे।

ठीक सवा दो बजे उस चुनाव क्षेत्र के मंत्री मान० अनिल कुमार बेचू और पी.पी.एस खामाजीत पहुँचे। उन्हीं का इन्तज़ार था औपचारिक रूप से पारितोषिक वितरणोत्सव का उद्घाटन करने के लिए। पूर्व से ही आयोजित कार्यक्रम के अनुसार बारी बारी से अपने अपने संदेश देने की माँग की गई, मुख्य अध्यापक श्री एम. रघुबर के स्वागत भाषण के तत्काल बाद ।

सर्वप्रथम पी.टी.ए. के प्रधान श्री रणुवा की बारी आई फिर मेरी और बीच-बीच में उन बच्चों को शिल्ड एवं पारितोषिक प्रदान किये गये।

मुख्य अतिथि उपप्रधानमंत्री माननीय बेचू जी ने मोरिशस समाज की गिरावट को दृष्टि में रखते हुए अपने संदेश में कहा कि सभी स्तर की पढ़ाई के बेशुमार धन व्यय किया जा रहा पर बदले में हम सही मानव पैदा करने में असमर्थ हो रहे हैं। हमें मानव मूल्य की शिक्षा देने की ओर बहुत ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। इस दिशा में उन्होंने माँ-बाप के सहयोग की माँग की।

उपस्थित सभी गण्यमान्य लोगों को फूलों के गुच्छों से सम्मानित किया गया और अन्त में सभी लोगों को जलपान करवाया गया।

सत्यार्थप्रकाश मास एवं पुरोहित दीक्षान्त समारोह

ओ३म् अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्, होतारं रत्नधातमम् ।।

ऋ० मं० १/सू १/मं० १.९

आचार्य चारुदत्त सोहर

सभी आर्य परिवार को विदित है कि आर्य सभा मॉरीशस ने जून महीने को सत्यार्थप्रकाश मास घोषित किया है। इस पूरे मास के अन्तर्गत सभी आर्य समाज मन्दिरों में यज्ञादि अनेक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। ये समस्त गतिविधियाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा प्रणीत वृहतकाय, सार्वजनिक ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में प्रतिपादित विषयों से सम्बन्धित होती हैं। अर्थात् उक्त विषयों पर चर्चा, उपदेश आदि होते हैं। विद्वत्वृन्द उन पर अपने विचार देते हैं और विषयों का उद्घाटन कर जनसामान्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

यह ज्ञात हो कि ब्रह्म से लेकर जैमिनि ऋषि पर्यन्त अन्तिम ऋषि देव दयानन्द जी महाराज माने जाते हैं। महर्षि जी का 'सत्यार्थप्रकाश' एक अद्वितीय ग्रन्थ माना गया है। यह २२ भाषाओं में अनूदित है। 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ का स्वाध्याय प्रतिदिन करने से व्यावहारिक जीवन के साथ साथ पारलौकिक परमानन्द की जानकारी होती है।

इस पावन महीने का लाभ उठाते हुए रविवार १६ जून २०१३ को काप मालेरे आर्य समाज मन्दिर शाखा समाज ८५ के अधिकारीजनों ने पुरोहित दीक्षान्त समारोह का अनुष्ठान किया। यह समारोह पं० विष्णुदेव बिसेसर जी, रिव्येर जू रॉपार आर्य ज़िला परिषद् के महामन्त्रीत्व में आयोजित किया गया था। प्रातःकाल १०.३० बजे ध्वजारोहण के पश्चात् दीक्षान्त समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञ ब्रह्मा श्री आचार्य चारूदत्त जी थे । पण्डित गोपाल जी एवं पण्डिता और पण्डित भोला जी ने भी कार्यक्रम में उपस्थिति दी । मन्त्र-पाठ उन लोगों द्वारा हुआ जिन् स्नातकों को दीक्षा दी गई। आप पाँच लोगों के नाम निम्नलिखित हैं–

पं० नवीनलाल चतारू जी ।
पण्डिता सुनीता रामप्रसाद जी ।
पं० आर्यानन्द सोब्रन जी ।
पं० विवेकानन्द सोब्रन जी ।
पं० विजय सोब्रम जी ।

आप सभी काप मालेरे ग्राम के ही निवासी हैं। उसी ग्राम के आर्य समाज मन्दिर के सदस्य हैं। मॉरीशस आर्य समाज के इतिहास में प्रथम वार ऐसा हुआ कि एक ही परिवार के चार सदस्य 'पण्डित' वा 'पण्डिता' के रूप में दीक्षित हुए।

दीक्षान्त समारोह में लगभग १५० से अधिक लोगों ने पँच-परमेश्वर के रूप में अपनी उपस्थिति देकर समारोह की शोभा बढ़ाई। कार्य के दूसरे भाग में रिव्येर जू रॉपार आर्य ज़िला परिषद् के महामन्त्री श्री विष्णुदेव बिसेसर जी ने दीक्षित लोगों का उत्साह बढ़ाया। आपने पुरोहितों की कुशलता पर विचार रखे और समारोह की सफलता पर अपनी असीम प्रसन्नता प्रकट की।

श्री आचार्य चारुदत्त जी ने उपरोक्त पाँच लोगों को दीक्षित करते हुए **'अङ्गवस्त्रम्'** से उनको अच्छादित किया और यह आशीर्वचन दिया कि यह **'अङ्गवस्त्रम्'** पुरोहित-पुरोहिताओं के कवचे रूप में उनके लिए मंगलकारी होवे।

आप ने **'अग्निमीले पुरोहितम्'** मन्त्र पद पर प्रकाश डालते हुए पुरोहित उपासक और अग्नि रूप परमात्मा, एक ही उपास्य देव का सम्बन्ध स्थापित किया। धन्यवाद भाषण एवं शान्ति पाठ पश्चात्, सहभोज से कार्यक्रम का विसर्जन हुआ।

सत्यार्थप्रकाश जयन्ती

पं० मुखलाल लोकमान

महर्षि दयानन्द जी महाराज के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की जयन्ती के शुभावसर पर आर्य सभा मॉरीशस द्वारा घोषित सत्यार्थप्रकाश मास के अन्तर्गत गृहस्थाश्रम और विवाह विषय पर कुछ विचार प्रस्तुत हैं। आशा है कि विवाहित लोग इन विचारों से लाभ उठायेंगे।

सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास में विवाह और गृहस्थाश्रम पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है। इस समुल्लास का आरम्भ महर्षि दयानन्द ने मनु महाराज द्वारा प्रणित 'मनुस्मृति' के एक श्लोक के उद्धरण से किया है जो इस प्रकार है –

वेदानधीत्य वेदौं वा वेदंवापि यथाक्रमम्।
अविप्लुत ब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रम माविशेत ।।

मनु० ३/२

इस श्लोक का सरल अर्थ है कि ज्ञान प्राप्त करके, विद्यार्थी को जीवन पूरा करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए।

प्राचीन समय में वेदों के अध्ययन से ही ज्ञान प्राप्त किया जाता था। वेद पढ़ने के लिए तप करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था। जिसका ब्रह्मचर्य खंडित हो जाता था, उसे गृहस्थ का अधिकार नहीं मिलता था। वर्तमान समय में विद्या पाने के लिए विद्यार्थी-जीवन का पालन करना पड़ता है। आज खूब पढ़-लिखकर ही लोग विवाह करते हैं।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि ब्रह्मचर्य का पालन करने के बाद ही माता-पिता को चाहिए कि वे समान योग्यता और शिक्षा रखने वाले लड़के और लड़की का विवाह करवाकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करवाएँ।

लड़के का विवाह माता के कुल की छः पीढ़ियों और पिता के गोत्र की कन्या से न करें। विवाह दूर स्थान पर ही करना चाहिए। एक गोत्र या मातृकुल में विवाह होने से हानि होती है। मातृ और पितृ कुल से अलग कुल में विवाह होना उसी प्रकार लाभदायक होता है जैसे दूध में मिश्री या सोंठ आदि मिलाने से उसका गुण बढ़ जाता है। साथ ही निकट सम्बन्ध होने से एक दूसरे के सुख-दुख का ज्ञान और विरोध होना भी संभव होता है। दूरी होने से प्रेम की डोर लंबी होती है। महर्षि दयानन्द दस ऐसे कुलों का वर्णन करते हैं जिनमें विवाह होने से दुख ही दुख मिलता है। वे कुल इस प्रकार हैं —

(१) जो सत्कर्मों से हीन हो।
(२) जिस परिवार में सत्पुरुष पैदा न हुए हों।
(३) जो कुल वेद विद्या से विमुख हो।
(४) जिस कुल के लोगों के शरीर पर लम्बे-लम्बे रोम हों ।
(५) जिस परिवार के लोगों में बवासीर की बीमारी हो ।
(६) जिस कुल में तपेदिक अर्थात् टी.बी. की बीमारी हो।
(७) जिस कुल में खाँसी और दमे के रोग हों।
(८) आमाशय और मिरगी आदि बीमारियाँ हों।
(९) श्वेत या गलित कोढ़ वाले हो।

इन कुलों के लड़के या लड़की से विवाह करने पर ये सब रोग विवाह करने वाले कुल में भी पहुँच जाते हैं।

फिर महर्षि दयानन्द ने विवाह की उम्र पर प्रकाश डाला है। वे तीन प्रकार के ब्रह्मचारी बताते हैं। पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करने वाले को 'वसु' ब्रह्मचारी, छत्तीस वर्ष वाले को 'रुद्र' ब्रह्मचारी और उससे आगे ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले को 'आदित्य' ब्रह्मचारी महर्षि का कहना है कि जब लड़का-लड़की विवाह करना चाहें तब उसका कुल, विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, शरीर का परिमाण की अनुकूलता को ध्यान में रखकर ही विवाह करना चाहिए। यदि इनका मेल न हो तो विवाह में कुछ भी सुख नहीं होता।

जो पुरुष ब्रह्मचर्य का पालन करके युवा होकर विद्या-विज्ञान से उन्नत होकर विवाह करता है वही सुखी होता है और समाज में सम्मान पाता है। आज बहुतों का वैवाहिक जीवन इसलिए सुखी नहीं है। क्योंकि लड़के-लड़की ने एक दूसरे के गुण, कर्म, स्वभाव और योग्यता की पहचान किये बिना विवाह कर लिया । जो स्त्री-पुरुष पूर्ण यौवनावस्था को प्राप्त करके उत्तम विद्या, सुशीलता, विनम्रता से विभूषित होकर विवाह करते हैं, उनका गृहस्थाश्रम सुखी होता है। उनकी सन्तान उत्तम होती है। वे गृहस्थ सुख भोगते हैं।

महर्षि दयानन्द ने मानव समाज को उन्नत तथा विकसित करने के लिए विवाह पद्धति का वेदानुकूल निर्देश दिया है – कि विवाह क्या है? विवाह कब किया जाना चाहिए? उसका महत्व क्या है? इस पर ऋषि जी ने तर्क सहित, विस्तृत रूप से शास्त्रों के प्रमाणों के साथ इस संस्कार की पुष्टि की है।

विवाह एक महान् संस्कार है जिस पर गृहस्थ आश्रम टिका हुआ है। एक कन्या और एक युवक मिलकर अपने परस्पर प्रेम से एक दूसरे को आत्म-समर्पण करके विवाह बंधन में बंध जाते हैं। सनातन-काल से हमारे समाज में इस विषय पर चर्चा होती आ रही है कि विवाह जन्म-जन्मान्तर का सम्बंध है जिसे हर हाल में निभाना पड़ता है।

विवाह का मुख्य उद्देश्य संतानों को जन्म देकर योग्य बनाना है, ताकि पितृ ऋण चुकाया जा सके। बच्चों का सुख, संतान का आनन्द, गृहस्थ होकर अन्य आश्रमों की सेवा – वानप्रस्थियों तथा संन्यासियों की सेवा और सत्कार करना, उनको भोजन, वस्त्र, रहने का ठिकाना प्रदान करना ताकि वे अपने ज्ञान और अनुभूतियों से मानव का कल्याण कर सके आदि कर्त्तव्य गृहस्थाश्रम के हैं। यह समझा जाता है कि मनुष्य संसार में तीन ऋणों से दबा हुआ है। ऋषि ऋण, देव ऋण और पितृ ऋण। हमारे प्राचीन ऋषियों ने ज्ञान सम्पादन करके उसे हम तक पहुँचाया है। उन ऋषियों के प्रति हम ऋणी हैं। समाज के विद्वान् लोग हमारे लिए सामाजिक व्यवहार को बनाये रखते हैं, इसलिए इन देवों के हम ऋणी हैं। माता-पिता ने हमें जन्म दिया है इसलिए माता-पिता के प्रति हमारा ऋण - पितृ ऋण है। जैसे उन्होंने हमें जन्म दिया है वैसे हमें भी विवाह करके सन्तान के क्रम को आगे बढ़ाना है। वंश-सूत्र को टूटने नहीं देना - इस दृष्टि से विवाह करके सुसन्तति प्रवाह का जारी रखना हमारा धर्म है। पितृ-ऋण चुकाना एक धार्मिक कर्त्तव्य है जो विवाह को ठेका मानकर नहीं, अपितु एक धार्मिक संस्कार मान कर ही पूरा किया जा सकता है।

क्रमशः

हिन्दी स्पीकिंग यूनियन द्वारा आयोजित प्रतियोगिताएँ

पं० सत्यानन्द फाकू

हिन्दी स्पीकिंग यूनियन द्वारा कई वर्षों से अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहा है, जिनमें प्राथमिक पाठशालाओं तथा माध्यमिक पाठशालाओं के छात्र-छात्राएँ भाग लेते हैं।

शुरुआत में प्राइमेरी स्तर पर कहानी-कथन का आयोजन किया गया था, उसके बाद सेकेण्डरी स्तर पर भी भाषण प्रतियोगिता (Elocution Contest) का आयोजन किया गया, अब तो पाउर पोंईट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जा रहा है।

जून महीने में प्राथमिक पाठशालाओं के छात्र-छात्राओं के लिए दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और कहानी-कथन प्रतियोगिता। इन प्रतियोगिताओं का प्राथमिक चरण तीन स्थानों पर चला, जिसमें पूरे देश की प्राथमिक पाठशालाओं के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। ज़ोन एक के प्रतिभागियों के लिए त्रियोले में, ज़ोन दो के लिए फ़्लाक के गायत्री भवन में और ज़ोन तीन एवं चार के लिए कात्रबोर्न में आयोजन किया गया था, जहाँ प्रथम चरण के लिए एक दिन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और दूसरे दिन कहानी-कथन प्रतियोगिता रखी गयी थी। सबसे पहले रिशमार, फ्लाक की प्रश्नोत्तरी के प्रतिभागियों में मोंताई ब्लॉश के लेडी पी.के. बुलेल सरकारी पाठशाला के छात्र प्रथम स्थान पर आये, जो फाइनल के लिए चुने गये । त्रियोले में ग्राँ बे सरकारी पाठशाला के छात्र प्रथम आये और कात्र बोर्न में जिपेरे सरकारी पाठशाला के छात्र प्रथम आये ।

इनका अन्तिम चरण बुधवार २६ जून २०१३ को सुबह महात्मा गान्धी संस्थान के सुब्रमण्यम भारती सभागार में सम्पन्न हुआ। हॉल छात्र-छात्राओं, अध्यापकों, मुख्य अध्यापकों से भरा हुआ था। महात्मा गांधी संस्थान के ऊँच स्तरीय शिक्षा विभाग के लगभग सभी प्राध्यापक भी उपस्थित थे, जिनमें डॉ० हेमराज सुन्दर जी भी थे। निमन्त्रित महानुभावों में महात्मा गांधी संस्थान के डाइरेक्टर जनेरल श्री विजय मधु जी, कला एवं संस्कृति मन्त्रालय के महासचिव श्री बगन, हिन्दी स्पीकिंग यूनियन के अध्यक्ष श्री राजनारायण गति जी, आर्य सभा मोरिशस के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी, मोरिशस भोजपुरी इंस्च्यूचूट की अध्यक्षा श्रीमती सरिता बुद्धू जी और अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित थे।

हिन्दी स्पीकिंग यूनियन के महासचिव श्रीमती अंजु घरबरन जी ने सत्र में आये सभी लोगों का स्वागत करते हुए प्रतियोगिताओं की सूचना दी और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई, जिसका संचालन श्री लोकप्रकाश हीरू जी कर रहे थे। प्रश्नोत्तर के १० चक्रों के बाद तीनों पाठशालाओं के नतीजे इस तरह रहे - प्रथम स्थान - लेडी पी.के. बुलेल सरकारी पाठशाला - ३५ अंकोंसे, दूसरा स्थान - जिपेरे सरकारी पाठशाला - २८ अंकों से और तीसरा स्थान - ग्राँ बे सरकारी पाठशाला - २१ अंकों से विजयी घोषित की।

कहानी कथन प्रतियोगिता के लिए दस छात्रों में से नौ ही उपस्थित हुए थे। सर विरासामी रिंगाडू पाठशाला का प्रतियोगी बस हड़ताल के कारण नहीं उपस्थित हो पाया था। इनमें प्रथम विजेता - नुवेल फ्रांस सरकारी पाठशाला का छात्र, दूसरा - पं० जवाहरलाल नेहरू सरकारी पाठशाला की छात्रा रही और तीसरा विजेता - पं० दौलत शर्मा सरकारी पाठशाला का छात्र रहा। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में – डॉ. जयचन्द लालबिहारी जी, डॉ. विधुर दिलचन्द और श्री ल. हीरू जी थे।

सभी विजेताओं को प्रमाण पत्र, पुस्तकों, नकद राशि और शिल्ड से पुरस्कृत किया गया। श्री विजय मधु जी के वक्तव्य के बाद हिन्दी स्पीकिंग यूनियन के प्रधान श्री राजनारायण गति जी ने यूनियन की गतिविधियों पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालते हुए धन्यवाद समर्पण किया।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम,*
आर्य भूषण
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

कैसे होता व्यय अनुदान ?

डॉ० बीरसेन जागरसिंह

छात्रों की दक्षता का
उनके नोट बुक साक्षी
विद्वानों की विद्वता का
उनकी विनयशीलता
गृहिणी की स्वच्छता का
द्वार पर बीछा पायदान
घर की छत पुरुषों एवं
फ़र्श स्त्रियों की पहचान
धार्मिकों की धार्मिकता का
उनके पूजा-स्थल साक्षी
देखकर होता हृदय गद्-गद्
तमिल-तेलुगु मंदिरों को
ईश्वर बसते सौंदर्य में
सत्यं शिवं सुंदरम् में
वैसे सरकारी अनुदान
मिलता है उन्हें कम
करोड़ों पाने वालों का
कैसे होता व्यय अनुदान ?
देखकर हिन्दी भाषियों के
मंदिरों-शिवालयों को
प्रश्नों के बवंडर उठते
डर है कि चपेट में उनका
विनष्ट न हो जाएगा
देश में पूरा हिन्दुत्व
धार्मिक अनुदान पाकर
अधार्मिक गतिविधियों में
व्यस्त धार्मिक नेताओं की !

गतांक से आगे

ऋषि दयानन्द की वेदाधारित समग्र क्रान्ति

सामाजिक क्रान्ति

डॉ० भवानीलाल भारतीय

ऋषि दयानन्द की सामाजिक क्रान्ति

परम निःस्पृह अवधूत दयानन्द ने समसामयिक भारत में सामाजिक चेतना को प्रायः विलुप्त अथवा अर्द्धमूर्छित अवस्था में देखा था। वेदों में जिस सुसंगठित, शक्ति सम्पन्न तथा बलशाली समाज की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी उसे किस प्रकार पुनः मूर्तिमान किया जा सकता है तथा समाज के विभिन्न घटकों के बीच में आये अविश्वास विद्वेष तथा शत्रुता के भावों को समाप्त कर सामंजस्य के भावों को कैसे पैदा किया जा सकता है, इसे वे भली-भांति जानते थे। स्वामी दयानन्द ने व्यक्ति तथा परिवार के सुसंगठित निर्माण को बलशाली समाज संरचना की आवश्यक कसौटी बताया था। भारतीय समाज में मध्यकाल में जो दुर्बलता आ गई थी उसका एक कारण रहा था वर्ण विद्वेष का पनपना, साथ ही स्पृश्यास्पृश्य की भावना, एक वर्ण का अन्यों की अपेक्षा स्वयं को ऊंचा मानना, जात्याभिमान के कारण तथाकथित निम्न वर्ग के लोगों के समाजिक तथा धार्मिक अधिकारों का अन्यों द्वारा अपहरण आदि। यह स्थिति इतनी विकृत हो गई थी कि परमात्मा की कल्याणी वाणी, वेदों के पठन-पाठन का अधिकार वर्ग विशेष ने स्वाधिकृत कर रखा था। यदि भूल-चूक से कोई द्विजेतर व्यक्ति वेदों का उच्चारण, अध्ययन, मनन आदि करने की धृष्टता करे तो उसके लिए भयंकर दण्ड का विधान किया गया था। इस विषम स्थिति को समाप्त कर समाज में पुनः सामंजस्य तथा समरसता की भावना को उत्पन्न करने के लिए ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट घोषणा की और बताया कि वेद परमात्मा की कल्याण वाणी हैं जिसके पठन-पाठन, अध्यापन तथा मनन-चिन्तन पर मनुष्यमात्र का अधिकार है। सामाजिक समता का उद्घोष उन्होंने यजुर्वेद के निम्न मंत्र का प्रस्तुत कर किया–

यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभयाम् आदि ।।

दयानन्द ने जिस सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात किया वह बहुआयामी थी। इसके द्वारा एक ओर जहाँ सामाजिक कुरीतियों का उच्छेद हुआ, वहाँ बहुधा विभक्त भारतीय समाज ने व्यक्तिहित से आगे बढ़कर समष्टिहित की बात सोचना आरम्भ किया। मध्यकालीन समाज के नेताओं ने अपने संकीर्ण चिन्तन के द्वारा जहाँ व्यक्ति के हित और स्वार्थ को सर्वोपरि माना वहाँ स्वामी दयानन्द ने व्यक्ति और समाज के समन्वित और सन्तुलित विकास की बात कही। आर्य समाज का नवां तथा दसवां नियम व्यक्ति और समाज के पारस्परिक हित साधन के लिए एक-दूसरे पर निर्भर होने की बात करते हैं। व्यक्ति स्वयं के हित के लिए जब प्रयत्नशील हो उस समय भी वह व्यापक सामाजिक हित को सर्वथा ओझल न होने दे। इस प्रकार व्यक्ति और समाज की भलाई अन्योन्याश्रित है। इसी में व्यक्ति और समाज के अधिकारों और कर्तव्यों का समन्वित विकास और रक्षण सम्भव है। दयानन्द द्वारा लाई गई सामाजिक क्रान्ति को समाज शास्त्रियों और इतिहासकारों ने विस्तार से विवेचित किया है। ***क्रमशः***

प्रेषक **- श्री हरिदेव रामधनी, आर्य रत्न, महामन्त्री आर्य सभा मोरिशस**

आर्य जगत् - सप्ताह रविवार, ०३ मार्च २०१३

O M

MOKA ARYA JILA PARISHAD

SHRAVANI MAHOTSAV CELEBRATIONS - 23th July to 1 September 2013

S/N	DATE	TIME	VENUE	PUROHIT
1.	Sunday 21July	8.00 to 10.00 a.m	Upper Dagotiere A.S.	Pt. Sookchandra Boojhawon
2.	Tuesday 23 July	3.00 p.m	Lower Dagotiere Mahila Samaj	Pta. Savita Taucoory
3.	Tuesday 23 July	4.00 p.m.	Ripailles Arya Mahila Samaj	Pta. Tarawantee Bumma
4.	Sunday 28 July	10.00 p.m	Lower Dagotiere A.M.S	Pta. S. Boojhawoon
5.	Friday 26 July	2.00 p.m	L'Agrement A.M.S	Pta. Champawatee Bumma
6.	Sunday 28 July	8.00 to 10.00 a.m	Upper Dagotiere A.S.	Pt. Sookchandra Boojhawon
7.	Sunday 4 Aug	8.00 to 10.00 a.m	Upper Dagotiere A.S	Pt. Sookchandra Boojhawon
8.	Sunday 11 Aug	8.00 to 10.00 a.m	Upper Dagotiere A.S.	Pt. Sookchandra Boojhawon
9.	Friday 16 Aug	4.00 p.m.	Upper Dagotiere A.S.	Pt. Sookchandra Boojhawon
10.	Saturday17 Aug	2.30 p.m.	Upper Dagotiere A.S.	Pt. Sookchandra Boojhawon
11.	Sunday 18 Aug	8.00 a.m.(Purnahuti)	Upper Dagotiere A.S.	Pt. Sookchandra Boojhawon
12.	Thursday 1 Aug	2.30 p.m	Lassurance Arya Mahila Samaj	Pta. Savita Taucoory
13.	Friday 2 Aug	1.00 p.m.	Maleinga A.M.S	Pta. Champawatee Bumma
14.	Friday 2 Aug	2.00 p.m.	Nouvelle Découverte A.M.S	Pta. Tarawantee Bumma
15.	Saturday 3 Aug	8.00 a.m	Nouvelle Découverte A.M.S	Pta. Tarawantee Bumma
16.	Saturday 3 Aug	2.30 p.m	Nouvelle Découverte A.M.S	Pta. Tarawantee Bumma
17.	Sunday 4 Aug	8.00 p.m	Nouvelle Découverte A.M.S	Pta. Tarawantee Bumma
18.	Thursday 8 Aug	2.30 p.m	Quartier Militaire Arya Samaj	Pt. Sateeanand Fakoo/ Pta. Savita Taucoory/ Pta. Chandrika Rajoo
19.	Friday 9 Aug	3.00 p.m	Quartier Militaire Arya Samaj	Pt. Sateeanand Fakoo/ Pta. Savita Taucoory/ Pta. Chandrika Rajoo
20.	Saturday 10 Aug	3.00 p.m	Quartier Militaire Arya Samaj	Pt. Sateeanand Fakoo / Pta. Savita Taucoory / Pta. Chandrika Rajoo
21.	Friday 8 Aug	3.00 p.m	Camp Thorel A.M.S.	Pt. Sateeanand Fakoo
22.	Saturday 10 Aug	3.00 p.m	Camp Thorel A.M.S	Pt. Sateeanand Fakoo
23.	Saturday 10 Aug	2.00 p.m	Moka Mahila Samaj	Pta. Champawatee Bumma
24.		8.00 a.m	Lagrement A.S.	Pta. Vishwanee Hemraz
25.	Sunday 11 Aug	9.00- '11.00 a.m	Dubreuil Arya Mahila Samaj	Pt. Sateeanand Fakoo
26.	Sunday 18 Aug	2.30 p.m.	Petit Verger A.M.S	Pta. Anjanee Maheeputh
27.	Sunday 18 Aug	3.30 p.m	Lavenir Arya Mahila Samaj	Pt. Rajen Tanakoor

B. Tanakoor *President* | **Pt. S. Fakoo** *Secretary* | **K. Seeburrun** *Treasurer*

ON THE GAYATRI MANTRA

Sookraj Bissessur (B.A. Hons.)

"One should promote Vidya (realization of subject and object) and dispel Avidya (illusion)."

The first of a thousand names-given to God by Bishamacharya was , **"Vishvam"** – the "Universe", potent in force, visible to all and an all dominating presence. Hinduism, which professes the very concept of "Vedanta"- which according to "Sat" being one with, consciousness. The Vedantic concept, strives to create a conscience towards social and moral obligations and postulates the principle of nature as the purest and most divine form of "Jshvara".

"Surya" -- The Sun, as a part of nature is a personification of God's Glory. His purity and this Darkness dispelling light.

The "Gayatri Mantra"- which is perhaps the basis of Hindu household religion – is an all enveloping power which sums up everything a mortal desires from life, truth and religion. It summarizes man's prayers perfectly :--

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।*(ऋ. १११-६२१०) or "Let us meditate on the most excellent light of Surya, our God, May he lighten our understanding and wisdom".*

The derivation that automatically follows from the "mantra"- is- " May God lead us from darkness into light." Shunning **"Maaya"** – The illusion, pray for anything and this mantra is the essence of your prayers.

In fact, the "Gayatri Mantra" -- is more than a propitiation chant, it is the **"Kundalini"** or centre of our peace of mind. It brings solace during times of adversity, trouble and tranquility when we are mentally, psychologically or emotionally disturbed.

A cynic may wish to challenge the existence of any power in this "mantra", while disclaiming the very existence of God, even the most profound cynic must profess faith in something, this may be an overawing faith in himself or in his disbelief. God is like a mirror in whose direction we direct our faith, our hope and our trust – these are – reflected back to us; by placing our confidence in Him. We place it ourselves. It is only a man of an iron constitution who can declare that he does not believe in God and have sincerity in his belief. And, yet it is the unbending oak which always comes crashing down in a storm while a willow simply bends and when calm returns, it straightens and resumes all its serenity.

Basically, man needs faith and hope to sustain him and God gives it to him, strengthening his weaknesses and guiding him/her with fortitude.

The "Gaytri Mantra" - can be expressed as God's representation on earth - - a symbol of the strength that is His and given to His people – when afflicted.

The German people have been researching and studying our ancient scriptures and have scientifically established the power of this "mantra". They have also discovered that by repeated full throated utterances of "OM" and of the rest of this "mantra" the nerves are calmed by the sound waves.

By way of conclusion, and in the light of the afore-mentioned concrete facts, it goes without saying that the "Gaytri Mantra" is more than a fragment of the symbolism of God and this firmament. It is a force and a power that may be harnessed by any person who cares or wishes to believe.

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

ACTIVITIES OF ACHARYA NARESH JI

DAILY PROGRAMME

Day/Dates	Time From	To	Place	Contact Persons	Tel. Nos
Thurs 01.08.13	3.00 p.m.	5.30 p.m.	Mahebourg Arya Samaj	Mr Dharam Gangoo	
Fri 02.08.13	3.00 p.m.	5.30 p.m.	Caroline Bel Air	Mr Sonalall Nemdharry	7509343
	7.30 p.m.	8.30 p.m.	Pt. Ramkhelawon, P. de Flacq		413044
Sat 03.08.13	9.00 a.m.	10.00 a.m.	Souillac Arya Samaj	Mr R. Ramjee	7969526
« «	4.00 p.m.	6.00 p.m.	Bassin Road Arya Samaj (Shrawani Yajna)	Mr Vinay Ramkisoon	9311202
Sun 04.08.13	7.00 a.m.	9.00 a.m.	Neergheen Bhawan	Mr Cowreea	7233942
	9.00 a.m.	10.00 a.m	Vacoas Arya Samaj	Mr Gowd	7827314
	11.00 a.m	12.30 p.m.	Ramawtar Mohith Hall, L'agrement, St. Pierre		
	3.00 p.m.	4.00 p.m.	Belle Mare Ashram		4151183
Mon 05.08.13	10.45 a.m	Noon	Vedic Vani	Pt. Daiboo	
	4.30 p.m.	6.30 p.m.	Mr Sanjay Chady – Solferino, Vacoas		7880631
Tues 06.08.13	7.30 p.m.	8.30 p.m.	Grand Bois Arya Samaj	Mr R. Ramjee	
Wed. 07.08.13	4.00 p.m.	5.00 p.m.	Trois Boutiques, Triolet A.S.	Mr Maudhoo	2619562
	6.30 p.m.	8.00 p.m.	Cap Malheureux Arya Samaj	Mr V. Sobrun	7907432
Thurs 08.08.13	4.30 p.m.	5.00 p.m.	Quartier Militaire Arya Samaj	Mr N. Ghoorah	
	7.00 p.m	8.30 p.m.	Gowsal Arya Samaj	Pt. Ramdewar	9120188
Fri 09.08.13	3.00 p.m.	5.00 p.m.	Shri Vikash Nuckchedy,Mare La Chaux		4972555
Sat 10.08.13	4.30 p.m.	6.00 p.m.	Surinam Arya Samaj	Mr R. Ramjee	7969526
Sun 11.08.13	9.00 a.m.	10.00 a.m.	Hermitage Arya Samaj	Pta. R. Saulick	7836704
	11.00 a.m	Noon	Dubreuil Arya Samaj		
Mon 12.08.13	10.45 a.m	11.30 p.m.	Vedic Vani	Pt. Daiboo	
Tues 13.08.13	6.30 p.m.	7.30 p.m.	Solferino Arya Samaj		
Wed. 14.08.13	6.30 p.m.	7.30 p.m.	Bassin Arya Samaj		
Thurs 15.08.13	4.00 p.m.	5.00 p.m.	C. des Masques Pave A.S.	Mr Dhoorandur	4160124
	7.30 p.m.	8.30 p.m.	Pt. Ramkhelawon, Poste de Flacq		
Fri 16.08.13	6.30 p.m.	7.30 p.m.	Treffles Arya Samaj		
Sat 17.08.13	3.00 p.m.	4.30 p.m.	Upper Dagotiere A. Samaj	Mr Tanakoor	9136808
Sun 18.08.13	10.00 a.m	11.30 a.m.	Bambous Arya Samaj	Mr R. Ramjee	
	2.00 p.m.	4.30 p.m.	Lavenir Arya Samaj		
Mon 19.08.13	10.30 a.m	11.30 a.m.	Vedic Vani	Pt. Daiboo	
Tues 20.08.13	7.30 p.m.	8.30 p.m.	Bois Cheri Arya Samaj	Mr R. Ramjee	7969526

OM

ARYA SABHA MAURITIUS
PAMPLEMOUSSES ARYA ZILA PARISHAD
SHRAVANI UPAKARMA MAHOTSAV CELEBRATIONS -
23rd July to 01st September 2013

S/N	DAY/DATE	TIME	VENUE RESPONSIBLE PANDITS	Veda Chps.	Verses	TOTAL
1	Tues. 23.07	14.30	ILOT A.S./ AMS 20/401 Pt. I. Sohur / Pta. D. Pokhraz	1+2	31 + 34	65
2	Wed. 24.07	3.00	Trio AS / AMS158 Pta. D.Chintamunee	3	63	63
3	Fri. 26.07	5.00	Gde Pte. Aux Piments AS/AMS 246/265 Pta. V. Mookhram / Pta. V. Jahul	4+5	37 + 43	80
4	Fri. 26.07	3.00	Gowsal AS/ AMS 246/ 265 Pta. Mukhram/ Pta. Jahal	6th	38	38
5	Fri. 26.07	5.00	Morc. Ramphul AS 43 Pta. P. Lutchmun / Pta. N. Ramkhelawon	7	48	48
6	Sat. 27.07	14.30	Solitude AS 215 Pt. M. Jeerakhun / Pta. P. Lutchmun	8	63	63
7	Sat. 27.07	1.30	B. Rouge,Pamplem. A.S. 27/269 Pt. S. Poonye/ Pta. L. Mungroo	34	58	58
8	Sun. 28.07	8.30	Dispensary Rd AMS 290 Pta. D. Chintamunee / Pta. V. Mookhram	9+10	40 + 43	83
9	Sun. 28.07	8.30	Market Rd AS 143 c/o Mrs T. Jhugroo Pta. D. Pokhraz/ Pta. L. Mungroo	11	83	83
10	Tues. 30.07	3.00	Pamplemousses A.S. 108 / 268 Pt. J. Aukhojee/Pta. L. Mungroo	12	1 - 59	59
11	Wed. 31.07	1.00	Maheswar Nagri A.S. 4 Pta. D.Chintamunee	13	60 - 117	58
12	Fri. 02.08	5.00	Gde Pte. Aux Piments AS/AMS 246/265 Pta. V. Mookhram / Pta. V. Jahul	15	31	31
13	Sat. 03.08	3.00	Calebasses AS. 406 Pt. S. Poonye / Pta. L. Mungroo	16	65	65
14	Sun. 4.08	2.00	Creve Coeur AS/AMS 182/396 Pt. I. Sohur / Pta. D. Pokhraz	17	99	99
15	Sun. 4.08	8.30	Derning A.S. 13 / 159 Pta. V. Ramnauth / Pta. V. Mookhram	18	77	77
16	Tues. 6.08	3.00	Fond Du Sac AS/ AMS 45/ 62 Pta. V. Mookhram/Pta. V. Jahul	19	95	95
17	Thurs. 8.08	14.30	Jouvence AS/AMS 3/398 Pt. I. Sohur / Pta. D. Pokhraz	20	90	90
18	Fri 9.08	2.00	Fond du Sac AMS 102 Pta. D.Chintamunee/Pta. N. Ramkhelawon	21	65	65
19	Fri 9.08	5.00	Gde Pte. Aux Piments AS/AMS 246/265 Pta. V. Mookhram / Pta. V. Jahul	22	34	34
20	Sat. 10.08	3.00	"Morc. St. Andre AS/AMS 7/136" Pt. M. Jeerakhun/Pta. V. Mookhram	23	65	65
21	Sat. 10.08		Mon Gout AS 5 Pt. J. Aukhojee/ Pta. D. Pokhraz	24	40	40
22	Sun. 11.08	8.30	Valton AMS 349 Pta. N. Ramkhelawon / Pta. L. Mungroo	25	47	47
23	Sun. 11.08	8.30	Navjeevan A.S. 353 Pt. J. Aukhojee / Pt. S. Poonye	26	26	26
24	Sun. 11.08	8.30	Notre Dame A.S. Pta. D. Pokhraz / Pta. N. Ramkhelawon			
25	Tues. 13.08	3.00	Camp la Boue AS no 354 Pt. S. Poonye/ Pta. N. Ramkhelawon	27	45	45
26	Fri. 16.08	2.00	9th Mile A.S. 32/304 Pta. V. Mookhram / Pta. Ramnath	28	46	46
27	Fri. 16.08	5.00	Gde Pte. Aux Piments AS/AMS 246/265 Pta. P. Lutchmun / Pt. V. Jahal	29	60	60
28	Sat. 17.08	3.00	Pte aux Piments AS/ AMS 450/322 Pta. V. Jahul / Pta. V. Ramnauth	30+31	22+22	44
29	Sun. 18.08	8.30	Fond du Sac AS/AMS 8 / 154 Pt. M. Jeerakhun/ Pta. D.Chintamunee	32+33	16+97	113
30	Tues. 20.08		Raksha Bandhan			
31	Wed. 21.08		Shravani Purnima			
32	Sun. 25.08	8.30	Morc. Hamlet AS/ AMS 197/129 Pt. S. Poonye / Pta. P. Lutchmun	35+36+37	22+24+21	67
33	Sun. 1.09		Bois Mangues AS/AMS 26/12 Pt. M. Jeerakhan / Pta. P. Lutchmun	38+39+40	28+13+17	58

G. Teeluck *President* **Dr J. Lallbeeharry** *Secretary* **J. Ramkhelawon** *Treasurer*

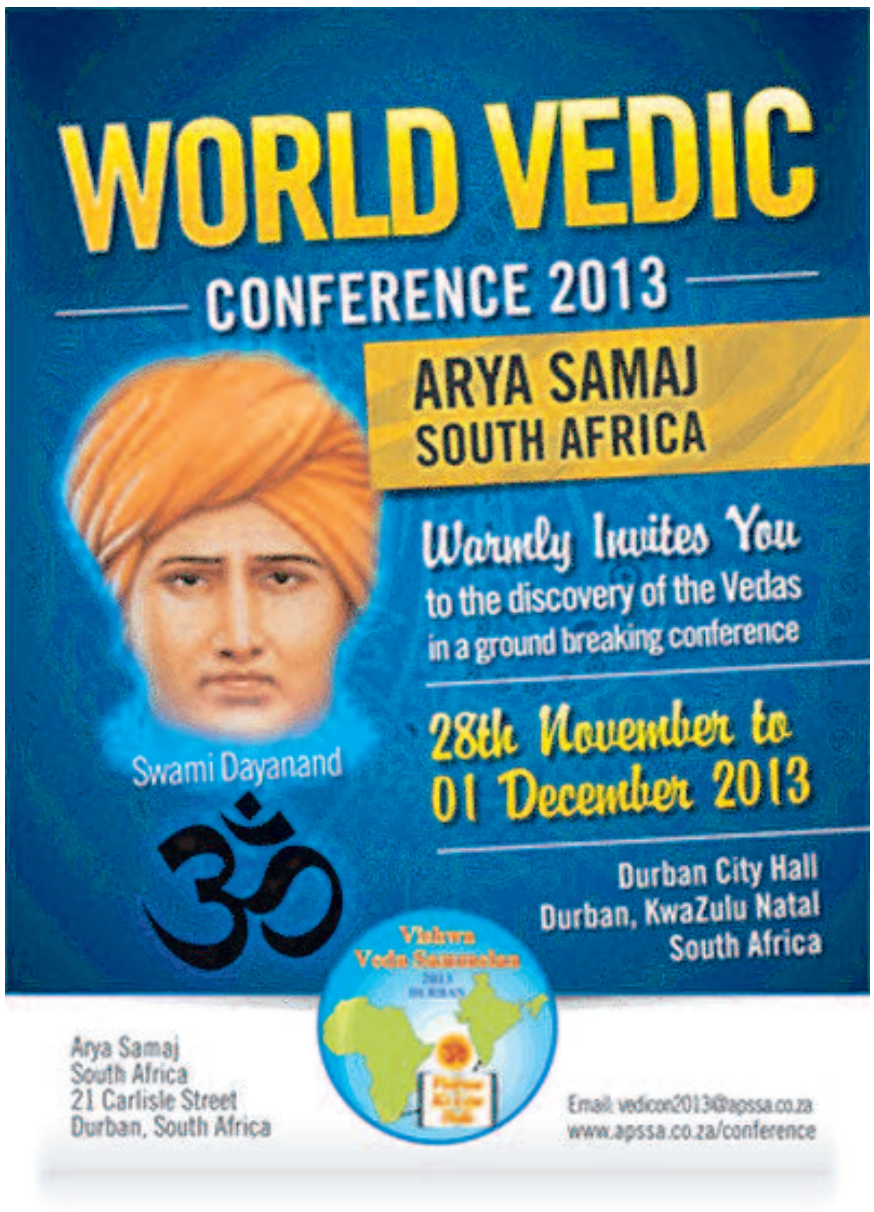

जो भी व्यक्ति इस महासम्मेलन में भाग लेना चाहें, वे शीघ्र से शीघ्र आर्यसभा के कार्यालय से पत्र द्वारा सम्पर्क स्थापित करें ।